(To be filled by the Candidate)

Date of Exam: 200418

Class: B.A

Paper code: 3152

Year: III

Paper: Geography of India

PART - A

BUNDELKHAND UNIVERSITY, JHANSI, U.P

OMR ANSWER BOOK (40 Pages)

PART - B

(TO BE FILLED BY THE EXAMINER)

Q. No.	SECTION A MARKS	Q. No.	SECTION B MARKS	Q. No.	SECTION C MARKS
1		1		1	
2		2		2	
3		3		3	
4		4		4	
5		5		5	
6		6		6	
7		7		7	
8		8		8	
9		9		9	
10		10		10	
11		11		11	
12	10	12	13	12	
13		13		13	
14		14		14	
15		15		15	
Total		Total		Total	

TOTAL IN WORDS: तेईस 23

Paper Code: 3152

Examiner Name: Ram Kumar

Signature of Examiner:

Evaluation Co-Ordinator Remark:

6406940

1

Long – 03

Long answer type question

भारत की जनघनत्व में बहुत भिन्नतायें हैं -

Long answer Type - Que - 3

भारत में जनघनत्व को प्रभावित करने वाले कारक विभिन्न है। जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं -

स्थायी तथा विश्वव्यापी कारक -: ये पर्यावरण में प्रत्येक देश, प्रदेश में व्याप्त होते हैं। जैसे - नदी, समुद्र, पर्वत, पठार etc. ये अपनी भिन्नताओं के साथ देश प्रदेश की पहचान बनाते हैं। ये स्थायी भी होते हैं। इनमें स्थायित्व का गुण पाया जाता है। जो निरन्तर अपना कार्य करते हैं। अपनी निरन्तरता बनाये रखते हैं।

नदी, खनिज, समुद्र, जीव-जन्तु, जल जैविक - अजैविक तत्व आदि सन्निहित हैं। समुद्र तल से ऊँचाई, भूमि की बनावट।

सांस्कृतिक कारण :- कुछ स्थान पर व्यवसाय उनकी विरासत में होता है। कृषि, पशु-पालन, बुटीर उद्योग आदि होता है। जोकि सांस्कृतिक कारण बनता है।

राजनैतिक व आर्थिक कारण :- कुछ जलवायु को प्रभावित करने वाले कारकों में राजनैतिक कारण भी होता है। वनों को अपनी स्वार्थिता व लाभ सिद्ध करने के लिये उगाते हैं। औद्योगिक रूप से व्यापार का संचालन करना। हरित गृह प्रभाव का उपयोग कर खेती करना। यदि इनसे लाभ न हो तो वनों का कटाव अधिक हो जायेगा।

आर्थिक कारण —

(I) बाजार की निकटता :- महानगरों व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले क्षेत्रों में बाजार आसानी से बन जाता है। क्रेता - विक्रेता का आदान - प्रदान बड़ा ही सुलभ हो जाता है।

II स्थिति — :- जलवायु अनुकुल हो तो कहीं भी प्रदेशों की विषमता पाया जाना कठीन नहीं होता है। यहाँ से एक अनुकुल व्यापार बन जाता है।

III धरातलीय बनावट :- हर प्र० में पर्वत, पठार, मैदान की बनावट ऊँची, नीची होती जिसमें जनघनत्व ज्यादा वह समतलीय प्र० होता है।

IV सरल कुशल श्रमिक :- जहाँ जनसं० अधिक हो वहाँ सस्ते व कुशल श्रमिक आसानी से मिल जाते हैं। क्योंकि बेरोजगारी अधिक पायी जाती है। यही कारण है श्रमिकों का मिलना।

http://www.upadda.com

परिवहन सन्चार —: परिवहनों का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

प० बंगाल में 100 प्रति व्यक्ति घनत्व पाया जाता है।
जहाँ परिवहन की सुलभता होगी वहाँ यातायात की समस्या नहीं होगी तो लोग कहीं भी बस सकते हैं।

http://www.upadda.com

पूँजी की उपलब्धता —: पूरक पर्वतीय क्षेत्रों में 86 – 132 / व्यक्ति km है। क्योंकि यहाँ साधन नहीं पूँजी को कमाने के लिये जो कि सबसे पहली आवश्यकता बन जाता किसी भी जगह निवास करने के लिये।

→ आगे 2 P.T.O

http://www.upadda.com

Short – 3

Short answer
Que – 3

short answer type

भारतीय कृषि एक मानसूनी जुआ है। इसकी कई समस्यायें रहती हैं।

1. प्राचीन दशायें कृषि को प्रभावित करती हैं।
   Ex- ओलों से फसलों को हानि पहुंचाना, टिड्डियों से खेत – के खेत साफ हो जाना।

2. भारतीय नदियों में बाढ़ आने से खड़ी फसलों को अत्यधिक हानि पहुंचती है।

3. भारतीय कृषि के लिये भू-क्षरण एक बहुत बड़ी समस्या है।

4. वर्षा की अनिश्चितता, अनियमितता व असमान वितरण भी एक समस्या होती है।

5. रासायनिक खाद उर्वरक का न मिलना।

6. अच्छे बीजों की कमी यहाँ की कृषि के लिए एक समस्या है।

7. भारतीय कृषकों को अपने भाग्य पर रहना।

8. N, वनस्पति अंश की कमी पाई जाती है।

9. सिंचाई के ससांधनों की उपलब्धता न होना। फलस्वरूप उत्पादन घटता।

Short-4

Short answer

Que-04

भारत में वर्षा का वितरण निम्न लिखित —ः

1. वर्षा ऋतु के 4 माह के समय देश के कुछ सीमित भागों को छोड़कर अधिकांश भागों में सामान्य से कहीं अधिक वर्षा का होना पाया जाता है।

☆ Ex- पश्चिमी घाट, पश्चिमी तट, पूर्वांचल असम में वर्षा की मात्रा 200 — 250 cm. पाई जाती है।

☆ Ex- प० बंगाल, बिहार, उड़ीसा, पूर्वी म०प्र०, उत्तरी आन्ध्र प्र०, तमिलनाडु, हिमांचल प्र० पूर्वी उ० प्र० (बुन्देलखण्ड), जम्मू - कश्मीर के पर्वतीय भागों वर्षा का औसत 100 — 200 cm. पाया जाता है।

☆ राजस्थान पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उ० प्र० में वर्षा का औसत 60 cm से भी कम पाया जाता है।

★ पश्चिमी घाट के पूर्वी वृष्टिछाया प्र० द्वारा स्थान — प० मरुस्थलीय भागों में वर्षा का औसत 50 cm. से भी कम होता है।

~~समुद्र से~~

http://www.upadda.com

Long answer – Que – 03 का शेष भाग

समुद्र से ऊँ० —: जहाँ के क्षेत्रों में समुद्र से ऊँ० अधिक हो वहाँ जनसं० अधिक निवास करती क्योंकि जनमाल की हानि कम होती।

खनिज —: जहाँ पर खनिज पर्याप्त मात्रा में पाये जाते वहाँ पर उद्योगों को सुचारु रूप से चलाना आसान होता — बॉक्साइट, लोहा (रानीगंज, बोकारो), इस्पात।

मिट्टियाँ —: मिट्टियाँ भी बहुत अधिक प्रभाव डालती हैं, जहाँ काली मिट्टी — कपास के लाभप्रद है, जहाँ पथरीली, लैटेराइट मिट्टी वहाँ वनस्पति नहीं उगेगी।

जीव – जन्तु —: जीव – जन्तु एक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते है। इनके बिना तो जीवन चक्र अधूरा हो जाता है।

http://www.upadda.com

ऐतिहासिक कारक —: ऐतिहासिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका है जो कि पर्यटन स्थल के रूप में हमारे सामने आते हैं। - ताजमहल, सिकन्दराबाद लास एंजिलस etc. इनके पास भी जनघनत्व अधिक पाया जाता है।

हेनरी फोर्ड ने डेट्राइट में अपना कारखाना स्थापित किया क्योंकि वह उसकी जन्मभूमि थी।
राजस्थान में बिड़ला इन्सटीट्यूट ऑफ टेक्नोलाजी स्थापित की।

Long - 2

Long answer type

Que- 02

भारतीय मिट्टियों की भौगोलिक विशेषतायें निम्नलिखित हैं —
भारत में मिट्टियों के वितरण को कई आधारों पर दर्शाया जाता है।
भारत में मिट्टीयाँ चट्टानों, पठारों, मैदान सिंचित प्रदेशों में अलग - २ प्रकार की पायी जाती हैं।

1. मूल चट्टानों के आधार पर —: लावा, ग्रेनाइट, चूना।
2. जलवायु के आधार पर —: टुण्ड्रा, टैगा, प्रेयरी, ग्लेशियर।
3. भू-स्थिति के आधार पर —: अपशिष्ट, परिवहित, काँप, ग्लेशियर, लोमस।
4. गुण के आधार पर —:

I - रंग —: भूरी, काली, पीली, लाल मिट्टी।

II- वातावरण के आधार पर —: पर्वतीय, पठारी, मैदानी मिट्टी
क्षारीय मिट्टी आदि।

III- कण के आधार पर —: रेतीली, दोमट, सिल्ट, अम्लीय, चिकनी मिट्टी आदि

IV- आयु के आधार पर —: नई मिट्टी, परिपक्व मिट्टी, पुरानी / वृद्ध मिट्टी।

V- निर्माण के आधार पर —: भौतिक, अपक्षय, रासायनिक के आधार पर मिट्टी

विज्ञान विलोकस "मानव सभ्यता का इतिहास तथा प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से ही प्रारम्भ होती है।"

और अन्य विद्वान डॉ० मुखर्जी, डॉ० वाडिया, डॉ कृष्णा, डॉ० राय चौधरी और रूसी विद्वानों ने 19 भागों में मिट्टी को विभाजित किया है।

(1.) जलोढ़ मिट्टी —: स्थान —: गंगा नदी के डेल्टाई भाग।
गहराई —: 25 - 35 Km.
क्षेत्रफल —: 7.68 km^2
रंग —: भूरा

जलोढ़ मिट्टी गंगा के मैदानी भागों डेल्टाई प्रदेशों में पायी जाती है। इसका विस्तार 7.68 km^2 है। जो कि इतनी इरी में विविधता रखती है। यह गंगा के अवसादों में 25 - 35 Km की गहराई में पाई जाती है। इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस, जैविक तत्वों की उपलब्धता नहीं पाई जाती है। इसमें चूना तथा पोटाश पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह बहुत अधिक उपजाऊ नहीं होती है।

http://www.upadda.com

II काली मिट्टी -: वनस्पति -: कपास
रंग -: काला
उत्पत्ति -: ज्वालामुखी के लावा, से
उपलब्धता -: चूना, पोटाश, Al, Ca, Mg
60% - घुलनशील तत्व, 11.2% - लौह आक्साइड, 9.4% - एल्युमिना
5.8% - जल 1.8% जीवांश, 1.8% - Mg.
काली मिट्टी को रेगुर मिट्टी भी कहते हैं।
यह बहुत ही अधिक उपजाऊ होती है, क्योंकि ज्वालामुखी लावा, मैग्मा से बनती है। जिसमें कई खनिज पदार्थ पाये जाते हैं।

III लाल-पीली मिट्टी -: उत्पत्ति -: प्रायद्वीप भारत के आसपास, आग्नेय व रुपान्तरित शैलों से
क्षेत्र -: 8 Lakh km^2
पाई जाती -: प० बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्र०, उड़ीसा, U.P.
यह मिट्टी कायान्तरित मिट्टी होती है जो भारत के प्रायद्वीप भागों के पास पाई जाती है। इसमें उपजाऊपन थोड़ा कम पाया जाता है।

http://www.upadda.com

IV लैटेराइट मिट्टी -: रंग -: ईंट के समान लाल
क्षेत्र -: 1.26 lakh km^2
पाई जाती -: केरल, महाराष्ट्र, असम, उड़ीसा, आन्ध्र
उत्पत्ति -: मानसूनी जलवायु
उपलब्धता -: 8% - लौह, 32.6% - Silica, 25.3% - Al, 0.4% चूना
यह ईंट के समान लाल जो कि आर्द्रता युक्त होती है।

V मरुस्थलीय मिट्टी -: रंग -: लाल
क्षेत्र -: 1.06 Lakh km^2
पाई जाती -: राजस्थान, हरियाणा
अभाव -: N, P, का अभाव, उपलब्धता -: नमक, कंकड़।
इस मिट्टी में वनस्पतियों का पनपना असंभव है।

VI पर्वतीय मिट्टी -: क्षेत्र -: 2.0 Crore Hectegear
उत्पत्ति -: हिमालय से
उपलब्धता -: चूना, डोलामाइट
प्रधान मिट्टी पर्वतीय मिट्टी निचले ढालों पर हल्की बलुई होती।
उत्पत्ति -: आग्नेय चट्टानों के शैलों से।

Short – 1

(16)

short answer type

Que – 1

भारतीय वन 6 प्रकार के बाँटे गये हैं जो निम्नलिखित हैं —ः

I उष्ण कटिबंधीय सदाबहारी वन।
II पर्णपाती या मानसूनी वन।
III उष्ण कटिबंधीय शुष्क मानसूनी वन।
IV मरुस्थलीय एवं अर्द्धमरुस्थलीय वन।
V ज्वारीय व डेल्टाई वन।
VI हिमालय प्रदेशीय कटीबंधीय वन।

Short – 10

(17)

short answer type

Que – 10

भारतीय बन्दरगाह —ः पत्तन उन्हें कहते हैं जहाँ समुद्र के किनारे पर या बीच में कटे – फटे किनारे होते हैं। इन पर जल मार्गों के द्वारा जहाजी बेड़े रुकते हैं। वहीं से व्यापार का लेन – देन प्रारम्भ होता है।

भारतीय बन्दरगाह 13 प्रकार के हैं –

मुंबई, कांडला, मार्मामार्ग, पोर्टब्लेयर, न्यू तूतिमूरिन, (जवाहर लाल नेहरु) कोच्चि, काटमांडू, अंडमान गुजरात, प॰ बंगाल, केरल, जम्मू कश्मीर आदि।

Short - 9

Que- 09 short answer

भारत में नगरीकरण के प्रवृत्तियों के निम्नवत् कारण हैं -

इसका मुख्य कारण है ग्रामीण इलाकों में प्रत्येक घर में समस्यायें रहती हैं जिन्हें पूरा करने के लिये लोग नगरों को पलायन कर जाते हैं। जिनमें से एक है बेरोजगारी।

आर्थिक कारण-: ग्रामीण इलाकों में कृषि के अलावा कोई व्यवसाय ऐसा नहीं जिसमें बहुत अधिक मात्रा में धन कमाया जा सके। इसलिये लोग शहरों की ओर दौड़ रहे।

सांस्कृतिक कारण-: जिस प्रकार लोगों की विरासत / पुश्तैनी व्यवसाय में लगे रहने से सोच में गति नहीं आती। उसे आगे लाने के लिए नगरों में जाते हैं।

http://www.upadda.com

ऐतिहासिक कारण-: लोगों में ऐतिहासिक स्थलों के प्रति जागरूकता रहती है तो वे पर्यटन करने शहरों में जाते जहाँ कुछ लोग कमाने के विचार से व्यवसाय चला लेते जो कि शहर में सम्भव है गाँव में नहीं।

बाजार की निकटता-: गाँवों में क्रेता - विक्रेता की कमी पायी जाती जहाँ बाजार का होना असम्भव सा हो जाता है। जिसे सिर्फ शहर, नगरों में ही सम्भव बनाया जा सकता।

सिंचाई-: नगरों में सिंचाई की समस्या नहीं रहती। लेकिन गाँव में सिंचाई की समस्या हमेशा बनी रहती क्योंकि किसी भी उद्योग लघु हो या कुटीर चलाने में जल की आवश्यकता तो होती ही है।

http://www.upadda.com

कुशल श्रमिक —: गाँवों में शिक्षा का अभाव होने के फलस्वरूप योग्य श्रमिक नहीं मिल पाते। शहरों में योग्य, कुशल श्रमिक आसानी से मिल जाते हैं।

परिवहन संसाधन —: नगरों में यातायात की असुविधा नहीं होती। गाँवों में सड़कों की सुरक्षा व देखरेख न होने के कारण उनमें गड्ढे हो जाते। जिससे यातायात दुर्लभ हो जाता।

संचार —: नगरों में संचार व्यवस्था दुरस्थ रहती। बिजली की भी समस्या नहीं होती है। 1949 के बाद सरकार ने भी कई प्रयास किये जो सफल न हुये।

Short -5

Que- 05 Short answer

भारत में सिंचाई की आवश्यकता —:
भारत में सिंचाई की आवश्यकता के निम्नलिखित कारण-:

1. भारत में सूखा 5 वर्ष में एकबार और बड़ा अकाल चक्र 50 वर्षों में कई या 1 बार भी पड़ता है।
2. भूकम्प / ज्वालामुखी फटना।
प्रति वर्ष नदियों, नालों, सागरों के सूखने की व सघनन ज्यादा होने से खारेपन की समस्या।
3. भारत में जलोढ़ मिट्टियों की अधिकता भी एक कारण।
4. वनों का दिन - प्रतिदिन नष्ट होने से वर्षा की कमी।
5. कुओं नहरों के पानी में कई अपशिष्ट पदार्थ डालने से उनमें सूखापन की समस्या भी एक कारण।

Short answer type

Que - 06

भारत में जनसंख्या के वितरण के असमान होने के कई कारण है —:

मिट्टियाँ —: जिन स्थानों पर मिट्टी कँकरीली, पथरीली पाई जाती वहाँ कृषि की सम्भावना नहीं होने के कारण जनसंख्या कम पायी जाती है — "राजस्थान"

वर्षा —: जिन स्थानों पर वर्षा अधिक हो अर्थात 250 cm. तक या इससे ज्यादा वहाँ पर भी जनसंख्या कम निवास करती — मासिनराम, मेघालय, असम, चेरापूँजी। यहाँ पर 86 प्रति व्यक्ति km^2 जनघनत्व है।
जहाँ वर्षा का अभाव यानि 15cm. वर्षा हो वहाँ भी जनसंख्या कम

निवास करता — राजस्थान, द० अफ्रीका।

तापमान —: तापमान का कम होना या अधिक भी जनसंख्या को प्रभावित करता है। जहाँ तापमान अधिक 55°c तो वहाँ पर जनसंख्या कम रहती।
जहाँ तापमान न्यूनतम वहाँ तो जनसंख्या का होना थोड़ा मुश्किल होता — हिमअच्छादित प्र०।

"अटांर्कटिका एक निर्जन क्षेत्र है।"

वनस्पतियाँ —: जहाँ वनस्पतियाँ अधिक वहाँ जीव-जन्तु अधिक होते जिनसे लोगों को खतरा रहता है — असम।
यहाँ हाथियों की सं० अधिक हो जो तोड़-फोड़ अधिक कर देते हैं।

अतः सिद्ध होता है जलवायु, तापमान, वर्षा मिट्टी, वनस्पति ये सभी जनसंख्या को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

http://www.upadda.com

कुछ लोगों का रहना उनका सांस्कृतिक कारण भी होता है। जो विवश होकर रहते हैं - राजस्थान

संसाधन —: संसाधन भी भारत के नगरीकरण के एक जिम्मेदार कारक होते हैं। क्योंकि गाँवों में इनकी उपलब्धता कम होती और machenic and engineering, electronics की दुकानें भी कम होती है जिन्हें सुधार सकें।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि जनसंख्या पर्वतीय व पठार भागों की अपेक्षा मैदानी भागों ज्यादा निवास करती है।

http://www.upadda.com